चेतावनी और संकेत

रजि० नं० बी ४४४८
लाअिसेन्स नं० १५

हरिजनसेवक

दो आना

(संस्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १७ | सम्पादक : मगनभाअी प्रभुदास देसाअी | अंक ६

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाअी देसाअी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद-९

अहमदाबाद, शनिवार, ता० ११ अप्रैल, १९५३

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

प्रधानमंत्रीकी घोषणा

[बम्बअी राज्य ५ अप्रैलसे १२ अप्रैल तक शराबबन्दी-सप्ताह मना रहा है। प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरूने अुक्त अवसरके लिअे नीचे दिया गया सन्देश भेजा है। अिस सन्देशमें अुन्होंने शराबबन्दीकी नीतिके विषयमें जो स्पष्ट घोषणा की है, वह हमारी राष्ट्रीय शराबबन्दीकी तामीलकी प्रगतिके रास्ते पर अेक सीमा-चिन्ह जैसी है। यह घोषणा कहती है कि कदम जो भी हो, वह आगेकी ओर होना चाहिये और "हमारी दिशा वही रहनी चाहिये"। जो राज्य अभी भी संकोच या हिचकिचाहटका अनुभव करते हों, अुन्हें नेहरूजीके अिस वक्तव्यमें केन्द्रीय सरकारका स्पष्ट निर्देश मिल सकता है; यों तो अुसकी कोअी जरूरत ही नहीं थी। भारतके प्रधानमंत्रीसे अिस राष्ट्रीय नीति पर अैसा स्पष्ट वक्तव्य प्राप्त करनेकी सफलता पर बम्बअी सरकार अपनेको बधाअीका पात्र मान सकती है।

६-४-'५३ —म० प्र०]

"शराबबन्दीका हमारे राष्ट्रीय कार्यक्रममें अेक लम्बी मुद्दत तक महत्त्वपूर्ण स्थान रहा। जब भारतका संविधान तैयार किया गया और मंजूर हुआ, तो अुसमें शराबबन्दीका अुल्लेख हमारी नीतिके अेक निर्देशक सिद्धान्तकी तरह किया गया। हमारे कुछ राज्योंने अुसकी पूरी-पूरी तामील की है, कुछने आंशिक और कुछ अुसकी दिशामें धीरे-धीरे बढ़ रहे हैं।

"स्थान स्थानकी परिस्थितियोंमें फर्क है और राज्य-विशेषकी शासन-व्यवस्थाकी जिम्मेदारी जिन पर है, अुन्हें अिस बातका निर्णय करना पड़ता है कि कौनसे कदम अुठाये जायं और अिस राष्ट्रीय नीतिको कब कार्यान्वित किया जाय। स्वाभाविक है कि ये कदम खूब सोच-विचारकर सावधानीके साथ अुठाये जायं, ताकि हरअेक कदम मजबूतीके साथ आगे बढ़े और कोअी अवांछित परिणाम पैदा न हो। लेकिन यह हमेशा याद रहना चाहिये कि हमें संविधानमें बतायी हुअी दिशामें ही जाना है।

"अिस सवाल पर काफी बहस हुअी है, खासकर आर्थिक कठिनाअियोंकी वजहसे। आर्थिक पहलूका खयाल तो करना है। लेकिन यदि सामाजिक दृष्टिकोणसे कोअी खास सुधार जरूरी मालूम हो, तो आर्थिक सवालका विचार गौण हो जाता है। हम अुस सुधारको कार्यान्वित करनेकी अुत्तम रीति और सही कदम क्या होंगे, अिस पर विचार कर सकते हैं, लेकिन हमारी दिशा वही रहनी चाहिये।

"सामान्य जनताका हित ही हमारे विचारका मुख्य विषय होना चाहिये। मुझे अिसमें कोअी सन्देह नहीं कि शराबबन्दीकी नीतिसे हमारी सामान्य जनताको अल्पकालिक और दीर्घकालिक, दोनों दृष्टियोंसे बहुत लाभ होगा।

"अतः बम्बअी राज्य द्वारा शराबबन्दी-सप्ताह मनाये जानेके अिस अवसर पर मैं अपनी शुभेच्छायें भेजता हूं।"

(अंग्रेजीसे)

आर्थिक समानता

आर्थिक समानता अर्थात् जगतके सब मनुष्योंके पास अेक समान सम्पत्तिका होना, यानी सबके पास अितनी सम्पत्तिका होना कि जिससे वह अपनी कुदरती आवश्यकतायें पूरी कर सकें। कुदरतने ही अेक आदमीका हाजमा अगर नाजुक बनाया हो और वह केवल पांच ही तोला अन्न खा सकता हो, और दूसरेको बीस तोला अन्न खानेकी आवश्यकता हो, तो दोनोंको अपनी-अपनी पाचनशक्तिके अनुसार अन्न मिलना चाहिये। सारे समाजकी रचना अिस आदर्शके आधार पर होनी चाहिये। अहिंसक समाजका दूसरा आदर्श नहीं रखना चाहिये। पूर्ण आदर्श तक हम कभी नहीं पहुंच सकते, मगर अुसे नजरमें रखकर हम विधान बनायें और व्यवस्था करें। जिस हद तक हम अिस आदर्शको पहुंच सकेंगे, अुसी हद तक सुख और सन्तोष प्राप्त करेंगे, और अुसी हद तक सामाजिक अहिंसा सिद्ध हुअी कही जा सकेगी।

अब अहिंसाके द्वारा आर्थिक समानता कैसे लाअी जा सकती है, अिसका विचार करें। पहला कदम यह है। जिसने अिस आदर्शको अपनाया हो, वह अपने जीवनमें आवश्यक परिवर्तन करे। हिन्दुस्तानकी गरीब प्रजाके साथ अपनी तुलना करके अपनी आवश्यकतायें कम करे। अपनी धन कमानेकी शक्तिको नियममें रखे। जो धन कमाये, अुसे अीमानदारीसे कमानेका निश्चय करे। सट्टेकी वृत्ति हो, तो अुसका त्याग करे। घर भी अपनी सामान्य आवश्यकता पूरी करने लायक ही रखे, और जीवनको हर तरहसे संयमी बनाये। अपने जीवनमें संभव सुधार कर लेनेके बाद अपने मिलने-जुलनेवालों और पड़ोसियोंमें समानताके आदर्शका प्रचार करे।

आर्थिक समानताकी जड़में धनिकका ट्रस्टीपन निहित है। अिस आदर्शके अनुसार धनिकको अपने पड़ोसीसे अेक कौड़ी भी ज्यादा रखनेका अधिकार नहीं। तब अुसके पास जो ज्यादा है, क्या वह अुससे छीन लिया जाये? अैसा करनेके लिअे हिंसाका आश्रय लेना पड़ेगा। और हिंसाके द्वारा अैसा करना संभव हो, तो भी समाजको अुससे कुछ फायदा होनेवाला नहीं है। क्योंकि द्रव्य अिकट्ठा करनेकी शक्ति रखनेवाले अेक आदमीकी शक्तिको समाज खो बैठेगा। अिसलिअे अहिंसक मार्ग यह हुआ कि जितनी मान्य हो सकें, अुतनी अपनी आवश्यकतायें पूरी करनेके बाद जो पैसा बाकी बचे, अुसका वह प्रजाकी ओरसे ट्रस्टी बन जाये। अगर वह प्रामाणिकतासे संरक्षक बनेगा, तो जो पैसा पैदा करेगा, अुसका सद्व्यय भी करेगा।

किन्तु महाप्रयास करने पर भी धनिक संरक्षक न बनें और भूखों मरते हुअे करोड़ोंको अहिंसाके नामसे और अधिक कुचलते जायें, तब क्या करें? अिस प्रश्नका अुत्तर ढूंढ़नेमें ही अहिंसक कानून-भंग प्राप्त हुआ। कोअी धनवान गरीबोंके सहयोगके बिना

www.vinoba.in

घन नहीं कमा सकता। मनुष्यको अपनी हिंसक शक्तिका भान है, क्योंकि वह तो अुसे लाखों वर्षोंसे विरासतमें मिली हुअी है। जब अुसे चार पैरकी जगह दो पैर और दो हाथवाले प्राणीका आकार मिला, तब अुसमें अहिंसक शक्ति भी आअी। हिंसक शक्तिका तो अुसे मूलसे ही भान था, मगर अहिंसक शक्तिका भान भी धीरे-धीरे, किन्तु अचूक रीतिसे रोज-रोज बढ़ने लगा। यह भान गरीबोंमें प्रसार पा जाये, तो वे बलवान बनें और आर्थिक असमानताको, जिसके कि वे शिकार बने हुअे हैं, अहिंसक तरीकेसे दूर करना सीख लें।

('हरिजनसेवक', २४-८-'४०) **मो० क० गांधी**

आध्यात्मिक मूल्योंकी पुनःस्थापना

['दि सोअर' अिंग्लैण्डसे निकलनेवाला अेक छोटा "विश्वव्यापी खेती और गांवों संबंधी समाचार देनेवाला पत्र" है। वह खेती और अुद्योग-धंधे तथा व्यापार और व्यवसायसे संबंध रखनेवाले आधुनिक जीवनके सारे क्षेत्रोंमें आध्यात्मिक मूल्योंकी फिरसे स्थापना करनेका ध्येय रखता है। अिंग्लैण्डसे अेक मित्रने अिस पत्रका १९५२ का वसन्तकालीन अंक भेजा है, जिसमें खेतीके बारेमें कीमती मसाला है। जैसा कि पाठकोंको याद होगा, ३१ जनवरी, १९५२ के 'हरिजन' में हमने अिसी पत्रमें से श्री विल्फ्रेड वेलॉकका "गांधीवादी अर्थ-व्यवस्था स्वीकार करो या नष्ट हो जाओ" लेख अुद्धृत किया था। नीचेका महत्त्वपूर्ण भाग 'सोअर' के अुसी अंकके संपादकीय लेखमें से यहां दिया जाता है। ता० २८-३-'५३ के 'हरिजन' में छपे सर जॉर्ज शुस्टरके भाषणमें अुन्होंने जो अिसी तरहकी हिमायत की है, अुसके अनुसंधानमें अिसे पढ़ना दिलचस्प मालूम होगा।

—म० प्र०]

ज्यों-ज्यों हम अधःपतनके रास्ते बढ़ते जाते हैं, त्यों-त्यों मुक्तिके मार्गकी खोज करना ज्यादा जरूरी होता जाता है। जब तक हम यह नहीं महसूस करेंगे कि हमारी मूल समस्या आध्यात्मिक है, तब तक हम मुक्तिका मार्ग नहीं खोज सकेंगे। आज जो दुनियाके राष्ट्रोंका अर्थतंत्र टूट रहा है, अुसका कारण नैतिक पतन है, आध्यात्मिक मूल्यों पर भौतिक मूल्यों या पैसेके मूल्योंकी विजय है।

हमने दिनोंदिन ज्यादा मात्रामें जीवनको चीजों और सुख-सुविधाओंके अुपभोगके अूंचे जीवन-मानके साथ अेकरूप बनाया है। अिस तरह अधिक मात्रामें अुत्पादन हमारा आदर्श बन गया है। जीवन और वस्तुओंके गुणका हमारे लिअे कोअी मूल्य नहीं रह गया है।

ज्यादा मात्रामें अुत्पादन करनेके लिअे हम अपनी जमीनको रासायनिक खादोंसे छा देते हैं, मुर्गी-बतखों वगैराको बैटरियों और गहरे झोलमें ढकेल देते हैं, अुन्हें और हमारे मवेशियोंको बहुत ज्यादा अुत्तेजक खुराक खिलाते हैं। अिस तरह अपने पशु-पक्षियोंको हम कमजोर बनाते हैं, जिसकी वजहसे वे कअी तरहकी बीमारियोंके शिकार होते हैं; जब कि जमीन और पशु अैसी खुराक देते हैं, जिसमें हमारे पोषणके लिअे अत्यन्त आवश्यक क्षारों, विटामिनों वगैराकी कमी होती है।

मुक्तिका आरंभ आध्यात्मिक मूल्योंकी पुनःस्थापनासे होना चाहिये।

आध्यात्मिक मूल्योंमें मानवके व्यक्तित्वका आदर आ जाता है। अिस व्यक्तित्वके विकासके लिअे किसी काम-धंधेका होना अत्यन्त आवश्यक है; और जहां काम-धंधेका खयाल मौजूद है, वहां अुद्देश्यकी प्रामाणिकता और काममें सचाअी अवश्य प्रकट होगी।

अिस तत्त्वज्ञानको जब हम खेती पर लागू करते हैं, तो अुसमें कुदरतका गहरा अध्ययन और जीवनके हर क्षेत्रमें — फिर वह मिट्टी हो, पेड़-पौधे हों, जानवर हों या मनुष्य हों — स्वास्थ्यकी गहरी चिन्ता करना जरूरी होता है। अिसका मतलब यह होता है कि जिन प्राणियोंसे हमें अपनी खुराक मिलती है, अुनके स्वास्थ्यका खयाल न रखकर अधिकसे अधिक मात्रामें अुत्पादनके छोटे रास्तोंको हमें छोड़ देना होगा।

अनेक दृष्टियोंसे यह अेक जरूरी समस्या है। अुदाहरणके लिअे, अगर हम अपने मौजूदा रेशनकी मात्रा कायम रखना चाहते हैं, तो अुस समय ब्रिटेनकी क्या हालत होगी, जब दुनियाके बाजार, जिनमें पहले ही काफी माल भर चुका है, मालसे खचाखच भर जायंगे और हमारे मालका अनचाहा निर्यात हमारी जरूरी खुराकके आयातकी कीमत चुकानेमें समर्थ नहीं रहेगा? ब्रिटेन अपनी आधी खुराक बाहरसे मंगाता है; और ज्यों-ज्यों खुराककी तंगी होगी, त्यों-त्यों कीमतें बढ़ेंगी जैसा कि अर्जेन्टाअिनाके मांसके बारेमें हुआ है। आधुनिक व्यापारका नियम यह है कि मालकी जितनी तंगी होगी, अुतनी ही अुसकी कीमत बढ़ेगी। अिन दोनों कारणोंसे अगर हम विश्वमें खुराककी तंगीके बारेमें दी गअी लॉर्ड बोअिड ओरकी चेतावनी पर फिरसे विचार करें और हमारे ही अिस द्वीप पर अपनी मेहनतसे ज्यादा अन्न पैदा करनेका निश्चय करें तो हमारा कल्याण होगा।

खेतीकी योजना और विकासके संबंधमें स्थानीय और प्रादेशिक कमेटियां कायम की जायं, तो अुनसे अिंग्लैण्डको और अुसकी विभिन्न प्रकारकी जमीनोंको, जिनकी अपनी अपनी विशेषता और खूबियां हैं, बड़ा लाभ होगा।

ज्यों ही कोअी अनअुपजाअू और बंजर जमीनको सुधारकर खेतीके लायक बनानेकी बात कहता है, त्यों ही पैसे और मजदूरोंकी कठिनाअियोंकी बात सामने रखकर अुसका जोरदार विरोध किया जाता है। यह सोच कर बड़ा ताज्जुब होता है कि अिस निहायत जरूरी कामको हम कब तक टाल सकेंगे और आखिरमें किस पीढ़ी पर अैसे खर्चसे, जो हर सालकी हमारी अुपेक्षासे बढ़ता ही जा रहा है, दिनोंदिन बिगड़ती जा रही जमीनको अुपजाअू बनानेकी जिम्मेदारी आयेगी। क्या हमारी अनअुपजाअू और बंजर जमीनको अुपजाअू बनानेकी समस्याका कोअी हल नहीं है? जब विदेशी बाजारोंमें हमारे मालकी कोअी मांग नहीं रह जायगी, तब हमें अपनी अिसी अुपेक्षित भूमिकी शरण लेनी पड़ेगी। तो हम समय रहते ही क्यों न चेत जायं? क्या हम ग्रामीण क्षेत्रोंमें काम करनेवाले सेवकोंकी अेक सेना खड़ी कर सकते हैं, जिसमें शहरी जीवनको छोड़कर जमीनकी सेवा और देशकी सेवाका जीवन बिताना चाहनेवाले नवयुवक और नवयुवतियां भरती हो सकें? लड़ाअीके दिनोंमें स्त्रियोंकी जो भूमि-सेना खड़ी की गअी थी, अुससे जमीन पर मेहनत करनेकी समस्या अच्छी तरह हल हुअी थी, और अुसे देनेके लिअे पैसा भी कहींसे न कहींसे मिल ही गया था।

गांवोंकी सेवामें ही हमारे आजके युगके भौतिकवादका, ग्रामीण क्षेत्रोंसे भागनेका, अन्नकी तंगीका, कमजोर स्वास्थ्यका और बीमारीका सच्चा अुत्तर है, जो भयंकर खर्चसे लोकहितकी योजनाकी मांग करते हैं।

www.vinoba.in

नअी अर्थ-व्यवस्थाके लिअे कअी तरहके त्याग करने होंगे और आजके जीवन-मानको घटाना होगा। अगर अुसे स्थायी अर्थ-व्यवस्थाका रूप लेना है, तो अुसकी जड़ें जमीनमें होनी चाहियें। अैसा साहसपूर्ण कदम अुठानेके लिअे बड़ीसे बड़ी हिम्मतकी जरूरत होगी। शस्त्रास्त्रों और संभाव्य मृत्युके बजाय यह जीवन और समृद्ध जीवन-पद्धतिका आह्वान है; संपूर्ण सर्जक जीवनके लिअे बड़ीसे बड़ी खोज और बड़ेसे बड़े पुरुषार्थका आह्वान है — अैसा सर्जक जीवन, जो सच्ची लोकशाही और संतुलित 'स्थायी अर्थ-व्यवस्था' का द्वार है।

(अंग्रजीसे)

श्रमकी पूंजीका अुपयोग करो

[प्रस्तुत लेख २६ जनवरी, १९५३ के 'अिकॉनामिक वीकली' से लिया गया है। खादी और दूसरे गृह-अुद्योगोंके खिलाफ हमारे मनमें विरोधकी तर्कशून्य भावना न होती, तो हमारी समझमें यह आसानीसे आ जाता कि अपने देशकी भारी बेकारी और अर्ध-बेकारी दूर करनेका सबसे जल्दीवाला रास्ता खादी तथा दूसरे गृह-अुद्योगोंको अपनाना ही हो सकता है। अैसे अुद्योग गरीबोंकी क्रय-शक्ति तो बढ़ाते ही हैं, वे हमारी अर्थ-व्यवस्थाको वितरण-सम्बन्धी कठिनाअियोंमें पड़नेसे भी बचाते हैं। क्योंकि ग्रामोद्योगोंकी बनी हुअी वस्तुओंकी बिक्री केन्द्रित भण्डारोंके जरिये या सामूहिक तौर पर नहीं होती। यह लेख ग्रामोद्योगोंकी संभावनाओं पर प्रकाश डालता है और सूचित करता है कि श्रमको पूंजी मानकर श्रम पर आधार रखनेवाली योजना की जा सकती है, जो पूंजी पर आश्रित योजनाकी बनिस्बत ज्यादा व्यवहार्य और वांछनीय है। कारण कि पूंजीका मिलना कठिन होता जा रहा है और पूंजी-आश्रित योजना किसी-न-किसी तरह पूंजीवाद और नौकरशाहीकी व्यवस्थाका निर्माण किये बिना नहीं चलायी जा सकती।

१८–३–'५३ — म० प्र०]

बहुत वर्ष पूर्व गांधीजीने जो सामान्य तथ्य बतलाया था, अभी हालमें श्रीमती जॉन रॉबिन्सनने अुसे दुहराया है। गांधीजीने कहा था कि यदि हम बड़े औद्योगिक कारखानोंमें बने हुअे माल पर अेक रुपया भी खर्च करते हैं, तो अुसका अधिकांश पूंजीपतिको मिलता है। लेकिन यदि हम अुसे हाथके बनाये माल पर खर्च करते हैं, तो वह मजदूरको मिलता है। अिसके सिवा, भारतमें किसान सालमें करीब आठ महीने बेकार रहता है। अतः योजनाकी हमारी सबसे बड़ी आवश्यकता यह है कि हम देशके २४ करोड़ ९० लाख लोगों (सन् १९५१की गणनाके अनुसार हमारी किसान आबादी) के दो-तिहाअी समयका अुपयोग करें, यानी दूसरे शब्दोंमें, १६ करोड़ ५० लाख लोगोंको पूरा काम देनेकी व्यवस्था करें। ब्रिटेनके औद्योगिक मजदूरोंकी संख्या अिसका १५ वां हिस्सा है, और अमेरिका तकमें वह अिस संख्याकी सिर्फ चौथाअी है। फिर अमेरिका दूसरी चीजोंके साथ-साथ ६० करोड़ टन कोयला और १० करोड़ टन लोहा अुत्पन्न करता है। जब तक हम अपना अुत्पादन अिसका चौगुना नहीं करते, तब तक हम अपने अतिरिक्त मजदूर-समुदायको अुद्योगोंमें काम पर लगानेकी आशा नहीं कर सकते। योजना-कमीशनके अनुमानके अनुसार, पांच सालके बाद, योजनामें जिन औद्योगिक तथा दूसरे कार्योंका प्रस्ताव किया गया है, अुनके पूरी तरह जम जाने पर जो अतिरिक्त काम-धन्धा अुपलब्ध होगा, वह अिस प्रकार होगा:

	अतिरिक्त कामधंधा कितने लोगोंको मिलेगा (वार्षिक, लाखमें)
१. अुद्योग, जिनमें छोटे पैमानेके अुद्योग शामिल हैं	४
२. सिंचाअी और बिजलीकी बड़ी योजनायें	७॥
३. खेती: सिंचाअीसे प्राप्त अधिक जमीनके कारण	१४
तालाबोंके जीर्णोद्धारसे	१॥
खेतीके लिअे जमीनके सुधारकी योजनाओंसे	७॥
४. निर्माण-कार्य	१
५. सड़कें	२
६. गृह-अुद्योग	२०+३६ (आंशिक समयके लिअे)
७. बाकी काम और स्थानीय निर्माण-कार्य	हिसाब नहीं लगाया गया

अिन संख्याओंका जोड़ किया जाय, तो ५५ लाख लोगोंको पूरा और ३५ लाखको आंशिक काम मिलेगा। हमारी कुल बेकारी १६ करोड़ ५० लाख है। अिस भयंकर बेकारीको दूर करनेकी कोशिशका आरम्भ मात्र करनेमें २०६९ करोड़ रुपये नहीं, अिससे लगभग ३० गुनी बड़ी रकमकी आवश्यकता होगी।

अूपर जिस सामान्य तथ्यका जिक्र हुआ है, अुसका अेक फलितार्थ यह है कि जिस देशकी जनसंख्या कम है, लेकिन जो भौतिक साधन-सम्पत्तिमें समृद्ध है, अुसे श्रमके खर्चमें किफायत करना चाहिये; परन्तु जहां संख्या ज्यादा है और गरीबी है, अुसे पूंजीमें किफायत करना चाहिये और श्रमका अुपयोग खुले हाथसे करना चाहिये। अिसलिअे यद्यपि योजनाको चाहे हम अेक दिलचस्प बौद्धिक कसरत मानें या अूपरी तड़क-भड़कसे युक्त अेक खिलौना कह लें, लेकिन यह स्पष्ट समझ लेना चाहिये कि अुससे हमारा कोअी सवाल हल नहीं होगा। समस्याका हल गांधीवादी अर्थनीतिके अनुसरणसे, यानी गृह-अुद्योगोंके जरिये ही होगा। गृह-अुद्योगोंकी अर्थ-व्यवस्था समझनेमें कठिन जरूर है। गृह-अुद्योगोंके मालको बहुत खर्चीला माना जाता है, और अैसा खयाल किया जाता है कि मिलोंके मालसे टक्कर लेनेके लिअे अुसे विशेष संरक्षण देनेकी जरूरत होती है। लेकिन अगर अेक बार यह बात समझ ली जाय कि गृह-अुद्योगोंका माल आखिर किसानके फुरसतके समयका अुत्पादन है, जिसमें कि वह अन्यथा कुछ कमाये बिना बैठा ही रहता, तो फिर अुनका महत्त्व ध्यानमें आ जाता है। स्वाभाविक है कि किसानको यह योजना बहुत आकर्षक नहीं मालूम होगी, क्योंकि अुसे केवल चार माह काम और बाकी आठ माह छुट्टी मनानेकी आदत पड़ गयी है। अुसकी दृष्टि बदलनेके लिअे काफी दृढ़तापूर्वक और लगातार प्रचार करनेकी आवश्यकता होगी। तभी परिस्थितिमें फर्क पड़ेगा।

ग्रामोद्योगोंके सिवा, खेतीका अुत्पादन भी बढ़ाया जाना चाहिये। सिंचाअी और खादकी बड़ी-बड़ी योजनाअें जब तक पूरी हो रही हैं, तब तक अिन कामोंके लिअे हमारी छोटी घरेलू पद्धतियोंका ही अुपयोग होता रहना चाहिये। अुदाहरणके लिअे, रासायनिक खादकी अुपयोगिताके विषयमें काफी सन्देह प्रगट किया गया है, और नहरोंकी सिंचाअीके बारेमें यह कहा जाता है कि अुससे जमीनमें धीरे-धीरे क्षारोंकी मात्रा बढ़ जाती है। हमारे देशमें सारेका सारा मैला बरबाद होने दिया जाता है। अगर अुसका पूरा अुपयोग किया जाय, तो खादके कारखानोंकी जरूरत ही न रह जाय और खेतीकी अूपज ज्यादा हो और सुनिश्चित भी हो। अिसी तरह जहां पानीकी सतह बहुत नीची

www.vinoba.in

नहीं है, वहां कच्चे कुओंसे सिंचाईकी समस्याका काफी अच्छा तात्कालिक हल हो सकता है। अुपज बढ़ानेके लिअे फसल बोनेकी सुधरी हुअी पद्धतियोंका, अुदाहरणके लिअे, चावलकी खेतीकी जापानी पद्धतिका, प्रयोग किया जा सकता है, और लाभ अुठाया जा सकता है।

(अंग्रेजीसे)

हरिजनसेवक

११ अप्रैल १९५३

चेतावनी और संकेत

भारतीय संघकी सरकारी हिसाब-समितिकी अुपसमितिने हीराकुंड बांध योजनाके कामके बारेमें अपनी रिपोर्ट पेश कर दी है। रिपोर्टका ब्यौरा प्रकाशित हो गया है और भारत-सरकारने अुसकी ज्यादातर सिफारिशें मान ली हैं।

अुपसमितिकी जांचसे जनताके सामने अुस कामकी जो हकीकतें आअी हैं, वे सचमुच बड़ी चौंकानेवाली और परेशान करनेवाली हैं। वे अेक सावधान और अीमानदार शासनकी प्रतिष्ठाको अितनी भारी हानि पहुंचानेवाली हैं कि यह कहना अत्युक्ति नहीं होगी कि अिस सारे कांडसे पंचवर्षीय योजनाके कामकी सचाअीमें और वर्तमान शासन-तंत्र द्वारा अुसके अमलमें रहे लोगोंके विश्वासको बहुत बड़ा धक्का लगेगा। कम-से-कम अितना तो कहना ही पड़ेगा कि अिस काममें गैरजिम्मेदारीभरी लापरवाहीकी हद तक पहुंचनेवाली अनुचित जल्दबाजी की गअी है और करोड़ोंके खर्चके निर्णय अनियमित और अनधिकृत रूपमें लिये गये मालूम होते हैं। हीराकुंड योजना 'जल्दीका काम शैतानका' वाली कहावतका प्रत्यक्ष और दुःखद अुदाहरण हमारे सामने पेश करती है।

अिस तसवीरका अेक दूसरा पहलू भी है। अीश्वरकी कृपा है कि बदनामीकी यह बात सरकारको अेक महत्त्वपूर्ण कमेटीकी चौकस निगाहमें ठीक समय पर आ गअी। और जनताको अुसके बारेमें विश्वासमें लिया गया है। यह अिस बातकी सामयिक चेतावनी और आवश्यक संकेत है कि अगर अूंचे पदों पर काम करनेवाले सरकारी अधिकारियोंको भी मनमानी करनेके लिअे छोड़ दिया जाय, तो किसी जरूरी पद्धतिके नियंत्रण और सरकारी पैसेके लिअे जरूरी चिन्ताके अभावमें वे कैसा व्यवहार कर सकते हैं। क्या वे यह महसूस करते हैं कि अुनमें और लोकशाहीमें रहे जनताके विश्वासको अुन्होंने अपने अिस व्यवहारसे कितना गहरा आघात और अपनी सरकारकी ख्याति और प्रतिष्ठाको कितना भारी नुकसान पहुंचाया है? हमें आशा है कि सरकार अिस मामलेमें सख्तीसे काम लेकर तथा सम्बन्धित शासनतंत्रको शुद्ध बनाकर — ताकि जनताको यह यकीन हो जाय कि अुसके पैसेका सदुपयोग ही होगा — लोगोंमें फिरसे विश्वास पैदा करेगी। अिसमें सरकारी नौकरोंके लिअे भी अेक सबक है। क्या वे अपने देशवासियोंके सच्चे सेवक नहीं बनेंगे और अपने हितके पहले देशके हितको जगह नहीं देंगे? अुनके बारेमें यह कहनेका मौका नहीं आना चाहिये कि अुन्होंने अपने ही लोगोंको अैसे समय धोखा दिया, जबकि अुन्हें ज्यादा सावधानी और प्रामाणिकतासे काम करना चाहिये था।

३१-३-'५३ मगनभाअी देसाअी

(अंग्रेजीसे)

मद्रास सरकारकी कपड़ेकी अेक नअी किस्म

पाठकोंको स्मरण होगा कि कुछ समय पूर्व मद्रास सरकारके मुख्यमंत्री आदरणीय श्री राजाजीने हाथ-करघेको आश्रय देनेके बारेमें रेडियोसे अेक बयान दिया था, जिसमें अुन्होंने यह भी संकेत किया था कि मिलके सूतके साथ हाथ-सूत भी बुना जाय। अिसके बाद अुन्होंने अैसे कपड़ेके कुछ नमूने बनवाये और अब मद्रास सरकारने निर्णय किया है कि सरकारके सब विभागोंके चपरासियोंके लिअे अैसा कपड़ा बनवाया जाय। मद्रास सरकारका अेक पुराना निर्णय है कि अिस कामके लिअे खादीका अुपयोग किया जाय। अिस नये निर्णयसे अुसमें अब यह बदल हो रहा है कि हाथ-सूतके साथ मिल-सूतका मिश्रण किया हुआ कपड़ा सरकारी विभागोंमें चलेगा।

अभीके निर्णयके अनुसार अिस कपड़ेकी बनावट अिस प्रकारकी होगी कि तानमें, अेक सूत २० नंबरका मिलका और दूसरा हाथकता नं० १८ का, अिनका बटा हुआ सूत रहेगा और बानमें दो सूत हाथ-कते नंबर १८ के रहेंगे। अिस प्रकार कपड़में ३ सूत हाथके और अेक मिलका रहेगा। अिस थोड़ेसे मिश्रणसे किंचित् किफायत तो जरूर होगी, पर क्या हम अुसे गिनने लायक किफायत समझें कि जिसके लिअे अैसा मिश्र कपड़ा बनाकर शुद्ध खादीकी परम्परा तोड़ी जाय? अिकहरा हाथ-सूतका ताना बुननेमें समय अधिक लगता है, जिसके लिअे बुनाअी अधिक देनी पड़ती है। पर सूत दुबटा किया जाता है तब वह, दोनों सूत हाथ-कते होने पर भी, काफी मजबूत हो जाता है, जिसे बुनना बिलकुल आसान है और जिसे बुननेका ज्यादा मजदूरी देनेकी जरूरत नहीं। बुनाअीकी मजदूरीमें किफायत होनेकी दृष्टिसे बटे हुअे सूतमें मिलका सूत लेनेका कोअी जरूरत नहीं दीखती। संभव है कि कपड़ा दीखनेमें कुछ अधिक साफ दीखे। पर अिसका फैसला मामूली बुनकरों द्वारा बड़ी तादादमें बुना हुआ कपड़ा देखकर ही किया जा सकता है। जिन दो केन्द्रोंमें अैसा मिश्र कपड़ा बनाना सोचा गया है, अुनमें से अेक वह अुत्तम अविनाशी नामका केन्द्र है, जो मद्रास सरकारने अपना वस्त्र-स्वावलम्बनकी खादी योजना चलानेके लिअे चरखा-संघसे लिया था और बादमें वह योजना छोड़ देने पर भी संघको वापिस देने अिन्कार कर दिया था। अिस केन्द्रकी कत्तिनें कुशल हैं, वहांका सूत भी अच्छा बुना जाता है। अुसका दुबटा कपड़ा काफी साफ रहेगा। क्या अेक सूत मिलका लेनेसे कपड़ा अधिक टिकाअू बनेगा? अविनाशी केन्द्रके सूत जैसे सूतसे बना हुआ दुबटा कपड़ा भी काफी टिकाअू होगा। विशेषज्ञोंका खयाल है कि टिकनेके बारेमें फर्क नहीं पड़ेगा। कुछका यह भी कहना है कि जो मिलका अेक सूत हाथ-सूतके साथ बटा जायेगा, वह हाथ-सूतको काटेगा। अिसलिअे तानेका सूत कुछ कमजोर हो जायगा। अुस मिश्र कपड़ेकी दर २८" अर्जके अेक गजकी १।।।=) गिनी गयी है। चरखा-संघ शुद्ध दोसूती खादी चपरासियोंकी पोशाकके लिअे २) गजके भावसे देता है, जिसमें अब खादी ग्रामोद्योग बोर्डकी ओरसे अेक रुपये पीछे तीन आना रियायत कटनेसे वह कपड़ा १।।=) गजके भावसे पड़ेगा। अुसका सूत कुछ मोटा जरूर रहता है, तथापि विशेषज्ञोंकी रायमें वह मिश्र कपड़ेकी अपेक्षा टिकनेमें कम नहीं है।

दुर्भाग्यसे वैसे मिश्र कपड़ेको दक्षिणके लोग राजाजी-खादी कहने लगे हैं। यह श्री राजाजीके प्रति सरासर अन्याय है, क्योंकि अुन्होंने तो अुसे मिल या हाथ-करघेके कपड़ेके समान ही माना है और वह खादीके नाम पर न चले, अैसा साफ कहा है। पर लोगोंकी जबान कौन पकड़े? संभव है अुसका नाम मिश्र खादी चल निकले, क्योंकि अुसमें चार सूतमें से तीन सूत हाथ-कते होते

www.vinoba.in

हैं। भारत-सरकारके कानूनकी व्याख्याके अनुसार अैसे मिश्र कपड़ेको खादी कहना जुर्म है। अभी तो यह कपड़ा मद्रास सरकारके विभागोंके लिअे ही बनाया जा रहा है, अर्थात् अुसे बाजारमें बेचनेकी कल्पना नहीं है। पर अगर वह अधिक पैमाने पर बन जाय, तो अुसका बाजारमें जाना और "मिश्र खादी" के नामसे बिकना संभव है। दूसरे लोग भी अैसा कपड़ा बनाकर बाजारमें बेच सकेंगे, चाहे अुसे नाम कुछ भी दिया जाय; और जिन्हें शुद्ध खादी पहननेकी परवाह नहीं है और जो कुछ नियमोंके बंधनके कारण खादी जैसा दीखनेवाला कपड़ा पहनकर संतोष मान लेते हैं, वे अैसे कपड़ेका अिस्तेमाल बहुत खुशीसे करेंगे। मद्रास सरकारके निर्णयमें यह भी कहा गया है कि अैसा मिश्र कपड़ा बनानेका काम विशेष स्थानके बुनकरोंको ही दिया जाय, और दूसरे बुनकरोंको जतला दिया जाय कि यह माल विशेष तरहका है, दूसरे बुनकर अैसा माल न बनावें। अगर दूसरे बुनकर शुद्ध खादीमें अिस तरह मिलके सूतका मिश्रण करेंगे, तो अुनके खिलाफ कड़ी कार्यवाही की जायेगी। पर यह बात अमलमें कैसे आयेगी, यह समझमें नहीं आता। जब कुछ बुनकर मिश्र कपड़ा बनायेंगे, तो दूसरोंको भी अैसा कपड़ा बनानेका मोह और प्रोत्साहन होगा ही, जिससे शुद्ध खादीको बड़ी ठेस पहुंचेगी।

अिस मिश्र कपड़का नामकरण अेक बड़ी जटिल समस्या दीखती है। कहा तो यह जायेगा कि अगर अैसे कपड़ेको बाजारमें जाना है, तो हाथ-करघेके नामसे ही जाना चाहिये। पर वास्तवमें अिसका क्या नाम चलेगा? अुसे मिलका कपड़ा तो कहेंगे ही नहीं, क्योंकि अुसमें तीन चौथाअी सूत हाथका है। मिश्र कपड़ा कहनेसे भी काम नहीं चलेगा, क्योंकि यह जतलाना जरूरी है कि अुसमें हाथ-सूत है और वह विशेष मात्रामें है। मिश्र खादी नाम चल निकलना संभव है, परंतु खादीके पीछे मिश्र शब्द लगाने मात्रसे अुसका पूरा अर्थबोध नहीं होता है। तथापि यह दीखता है कि अिसके नाममें से खादी शब्द हटाना मुश्किल होगा। पर खादी शब्दका प्रयोग मिश्र शब्द जोड़ने पर भी शायद कानूनके खिलाफ हो। अैसा दीखता है कि अगर खादी शब्दका अुपयोग करना ही हो, तो अुसे अशुद्ध खादी कहना वाजिब होगा।

चरखा-संघकी पहलेसे मांग थी कि केन्द्रीय और सब राज्य-सरकारोंके विभागोंमें कपड़ेके लिअे खादीका ही अुपयोग किया जाय। अब भारत-सरकारने अखिल भारतीय खादी और ग्रामोद्योग बोर्ड बनाया है। अुसकी भी यही मांग है। लोगोंने आशा रखी है कि अिस बोर्डके द्वारा खादी अुत्पत्तिको खूब प्रोत्साहन मिलेगा। खादी बहुत बड़ी तादादमें बनेगी और चूंकि बोर्डकी यह खादी योजना बेकारीमें राहत पहुंचानेके लिअे है, अिसलिअे जहां कहीं और जितना भी हाथ-सूत कते अुसका अुपयोग हो जाना चाहिये। खादीकी खपत नहीं होती है, अिस मुद्दे पर हाथ-कताअीका काम कदापि रुकना नहीं चाहिये। अर्थात् खादीकी खपतकी जिम्मेवारी सब सरकारों पर है। यह भी अपेक्षा रखी गअी है, और कुछ आश्वासन भी मिला है, कि केन्द्रीय और राज्य-सरकारोंके सब विभागोंमें (पुलिस और मिलिटरीकी पोशाक छोड़कर) कपड़ेकी जरूरत खादीसे ही पूरी की जाय। खादीको कमसे कम अितना आश्रय देना सब सरकारोंका कर्तव्य भी है। जब सरकारें चाहती हैं कि जनता खादी (शुद्ध) का अिस्तेमाल करके बेकारीको राहत पहुंचानेकी दृष्टिसे हाथ-कताअीको प्रोत्साहन दे, तब सरकारें खुद शुद्ध खादीका अिस्तेमाल करनेसे अिन्कार कैसे कर सकती हैं? अिस दशामें यह समझमें नहीं आता कि मद्रास सरकार या दूसरी कोअी भी सरकार अपने कामके लिअे मिश्र कपड़ेका अुपयोग कैसे कर सकती है?

मिश्र कपड़ा मिलके या हाथ-करघेके कपड़ेकी अपेक्षा बहुत ज्यादा महंगा रहेगा ही, क्योंकि अुसमें हाथ-सूतका अुपयोग किया गया है — चाहे वह अंशतः ही क्यों न हो — जो कि मिलके सूतसे कअी गुना अधिक महंगा रहेगा ही। अगर अैसा मिश्र कपड़ा बाजारमें बिकनेके लिअे आवे, तो वह स्पर्धामें कैसे टिकेगा और कैसे बिक सकेगा? खादीके लिअे लोग भावनासे ज्यादा दाम देनेको तैयार होते हैं, जो कि मिश्र कपड़ेके लिअे संभव नहीं है। अिस दशामें मिश्र कपड़ेके लिअे बाजारकी तो कल्पना ही नहीं की जा सकती। फिर वह केवल सरकारोंके घरमें ही चल सकता है, अुन सरकारोंके जिनका यह कर्तव्य है कि वे शुद्ध खादीको ही प्रोत्साहन दें।

अगर यह कहा जाय कि तानेमें मिलका सूत डालनेके कारण हाथ-सूतका अुपयोग करनेमें सुविधा और सस्तापन है, तो क्या सरकार यह जिम्मेवारी लेनेको तैयार है कि देशमें जितना भी सूत हाथसे काता जायेगा, अुस सारे सूतका अुपयोग वह अिस तरह कर लेगी, ताकि हाथ-सूतका प्रश्न सदाके लिअे हल हो जाय? मैं अभी तो अिसकी कल्पना भी नहीं कर सकता कि सरकार अैसा करनेको तैयार होगी। अगर वैसा हो तो सरकार अुसका वचन दे। अगर अैसा नहीं हो सकता है, तो फिर यह मिश्र खादीका अुपयोग क्यों हो रहा है? मद्रास सरकारका यह कर्तव्य है कि वह जनताको स्पष्ट बतलावे कि खादी जगतमें अुथल-पुथल करनेकी यह बात अुन्होंने क्यों ठानी है, ताकि अुसके गुण-दोषकी चर्चा हो सके। अगर सरकार वैसा नहीं करती है, तो लोगोंको अुसे दोष देनेका अधिकार हो जाता है। यह कल्पना की जा सकती है कि हाथ-सूत अगर बहुत बड़ी तादादमें बनने लगे और अुसकी बनी खादी खप न सके, तो हाथ-सूत ही बाजारकी स्पर्धामें कम दामोंसे बिकने लग जाय। पर सरकार खुद मिश्र कपड़ा बनवा कर अपने लिअे अुसका अुपयोग करे अथवा अुसके बाजारमें आनेका कारण बने, यह समझमें नहीं आता।

३०-३-'५३ श्रीकृष्णदास जाजू

चांडिल सम्मेलनकी फलश्रुति

[श्री विनोबा द्वारा अेक कार्यकर्ताको लिखा हुआ पत्र]

चांडिलके सम्मेलनसे मुख्य लाभ तो यह हुआ कि कार्यकर्ताओंके विचारोंकी कुछ सफाअी हुअी। बहुतसे रचनात्मक कार्यकर्त्ता छोटे-मोटे कामोंमें लगे हुअे हैं, और अपनी शक्तिभर कार्य करते रहे हैं। भूदान-यज्ञका अेक नया काम आया और अुनके कार्योंमें अेक कामकी वृद्धि हुअी, अितना ही अकसर कार्यकर्त्ता समझे थे। लेकिन चांडिलके सम्मेलनमें जो चर्चा हुअी, अुससे यह बात स्पष्ट हुअी कि हमारे चालू कामोंमें से जितने काम हम समेट सकते हैं, अुतने समेटकर भूदान-यज्ञमें कूदना पड़ेगा। सिर्फ अनेक कामोंमें अेक कामकी वृद्धि नहीं हुअी है, बल्कि अनेक कामोंको अुदरमें समा लेनेवाला काम अुपस्थित हुआ है।

पुराने अनुभवी कार्यकर्त्ताओंकी संख्या सीमित है। अुनकी मददमें सैकड़ों नये कार्यकर्त्ताओंको काम करनेका मौका मिलेगा। आज देशमें अिस कामके लिअे जो अुत्साह है, अुसे देखते हुअे मुझे अुम्मीद है कि नये कार्यकर्त्ता पर्याप्त संख्यामें मिलेंगे। अुनको कुछ तालीम भी देनी होगी, जिसका अिन्तजाम सर्व-सेव-संघको करना होगा।

छठा हिस्सा जमीन प्राप्त करना भूदान-यज्ञका सबसे छोटा अंश है। मुख्य अंश तो आगे करनेके कामका है। प्राप्त की हुअी जमीन तकसीम करनी होगी। जिन्हें जमीन दी जायेगी, अुन्हें कामके लिअे साधन-सामग्री भी दिलानी होगी। अुनको जमीन पर स्थिर करना होगा। जिन गांवोंमें जमीन मिलेगी, अुन गांवोंमें खादी, ग्रामोद्योग, नअी तालीम आदिके जरिये ग्रामराज्यकी स्थापना करनी होगी।

www.vinoba.in

जहां काश्तके काबिल पड़ती जमीन मिली है और मिलेगी, वहां नये सिरेसे गांवको बसाना होगा और ग्रामरचना करनी होगी। अिस कामके लिअे सबका सहयोग हासिल करना होगा। जनशक्ति जाग्रत करनी होगी। और सरकारसे भी जो मदद मिल सके, हासिल करनी होगी। अुसे अपने कर्त्तव्यका भान कराना होगा।

भूमिदान-यज्ञ और अुसके आगेके काम सम्पत्तिदान-यज्ञके बिना पूर्ण नहीं हो सकते। अिसलिअे सम्पत्तिदान-यज्ञका विचार भी सामूहिक जीवननिष्ठाके तौर पर लोगोंको समझाना होगा।

यह सारा काम जितना विशाल और व्यापक है, अुतना ही गहरा और ठोस भी है। अिसीका नाम सर्वोदय है। भूमि अिसका अधिष्ठान है। सेवकगण कर्त्ता हैं। सम्पत्तिदान-यज्ञ करण है। अन्न-वस्त्र-स्वावलम्बन आदि अिसमें करनेकी विविध क्रियाअें हैं। और लोकमानस अनुकूल बनाना ही अिसका देवता है। मैं आशा करता हूं कि सर्वोदय प्रेमी सब भाअी-बहन अपनी पूरी शक्ति अिसमें अेक साथ लगायेंगे और अिस विराट यज्ञको सफल बनायेंगे।

महतोमारो, २२-३-'५३

चांडिल सर्वोदय सम्मेलन

ता० ७, ८, ९ मार्च, १९५३ को देशके रचनात्मक कार्यकर्ता सर्वोदय समाजके आश्रयमें अपना वार्षिक अधिवेशन करनेके लिअे दक्षिण-पूर्व बिहारके मानभूम जिलेके चांडिल गांवमें मिले। यह स्थान टाटानगरसे लगभग २१ मील और रांचीसे ७१ मील पर है। चांडिल छोटा नागपुरकी अूंची चौरस भूमिमें स्थित अेक छोटा-सा कस्बा है।

सिर्फ हाथ-बनी चीजें

चांडिल जैसी पहाड़ी और मानो अीश्वर-अुपेक्षित जगहमें लगभग दो हजार आदमियोंके रहने लायक बस्ती खड़ी करना कोअी आसान काम नहीं है। लेकिन अैसी परिस्थितिमें भी सबके लिअे सन्तोषप्रद प्रबन्ध करनेका सारा श्रेय बिहारके रचनात्मक कार्यकर्ताओंके बुजुर्ग नेता श्री लक्ष्मीनारायण बाबू और अुनके अनेक साथियोंको है। हमारे बिस्तरके लिअे कोअी पलंग, खाट या तखत नहीं थे; प्याल नामकी सादी घास जमीन पर बिछा दी गअी थी। हमारी कुटियोंकी दीवारें और छत ताड़के पत्तोंके बनाये गये थे। पासकी पहाड़ियोंसे निकला हुआ अेक छोटा-सा झरना, जिस पर स्थानीय गांववालोंने कुछ समयके लिअे अेक बांध बांध दिया था, हमारे नहाने और कपड़े वगैरा धोनेका काम देता था। भोजनकी सारी चीजें या तो कुदरती रूपमें थीं या हाथ-कुटी और हाथ-पिसी थीं; मिलकी चीजों — शक्कर, वनस्पति, चावल या गेहूं — का सर्वथा अभाव था। मिलनेका स्थान या पंडाल सादेसे सादा था; अुसके नीचे और अूपर चटाअियां थीं और अेक छोटा-सा अूंचा चबूतरा, जिस पर सफेद खादीकी चद्दर बिछी थी, मंचका काम करता था। न वहां झण्डा था, न परदे थे, न तसवीरें थीं और न चित्र थे — टीमटाम और तड़क-भड़ककी अेक भी चीज नहीं थी।

सम्मेलनकी बैठक दिनमें दो बार होती थी। अुसके सभापति अखिल भारत चरखा-संघके प्रसिद्ध अध्यक्ष श्री धीरेन्द्र मजूमदार थे। सुबह आठ बजे आधे घंटेकी मूक कताअी और प्रार्थनासे सम्मेलनका काम शुरू हुआ था। फिर श्री लक्ष्मीबाबू द्वारा स्वागतके कुछ शब्दोंके बाद अुड़ीसाके अनुभवी और कर्मठ रचनात्मक कार्यकर्ता श्री गोपबन्धु चौधरीने अेक छोटे भाषणके साथ सर्वोदय प्रदर्शनीका अुद्घाटन किया। सभापतिका भाषण अिससे भी छोटा था। धीरेन्द्रभाअीने (जैसा कि सभापतिको प्यारसे पुकारा जाता है) अपने श्रोताओंका ध्यान भारतकी आम जनताकी अूंची आशा और हिंसक क्रांतिके खतरेकी ओर खींचा। अुन्होंने कहा कि अगर जनताकी आशा पूरी नहीं हुअी, तो यह हिंसक क्रांति हम सबको निगल जायगी। भाषणके अंतमें अुन्होंने कहा कि जनताकी अुस आशाको पूरा करनेके रास्ते और अुपाय खोजना अिस सम्मेलनका काम है। अिसके बाद सर्वोदय समाजके महामंत्री श्री शंकरराव देवने पूरे सालके कामकी रिपोर्ट पेश की।

डॉ० राजेन्द्रप्रसादका भाषण

सभामें अुपस्थित लोगोंमें भारतके सर्वोच्च अधिकारी हमारे राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्रप्रसाद भी थे। अपने स्पष्ट और दिलको छूनेवाले २० मिनटके भाषणमें अुन्होंने यह मंजूर किया कि स्वराज्यके आनेसे लोगोंकी आशायें पूरी नहीं हुअीं और मैं नहीं कह सकता कि वे कब पूरी होंगी। जिनके हाथमें देशका शासन है, अुनमें अिस वांछित ध्येयको प्राप्त करनेका साहस नहीं है। तड़क-भड़क और ठाटबाटसे घिरे हुअे वे लोग न तो अपने माने हुअे प्रिय आदर्शका पालन करते और न अुसमें श्रद्धा रखते। व्यक्तिगत रूपसे मेरा सर्वोदयके अूंचे आदर्शमें आज पहलेसे कहीं ज्यादा पक्का विश्वास है, लेकिन आजके वातावरणमें मैं खो-सा जाता हूं, रास्तेसे भटक जाता हूं और अुस आदर्शको जीवनमें नहीं अुतार पाता। यहां कअी पुराने और परिचित साथियोंको देखकर मुझे आनन्द होता है; अिससे भी ज्यादा आनन्द मुझे नये लोगोंको देखकर होता है — यह जीवनका चिन्ह ह। मेरा विश्वास है कि सर्वोदयवादी लोगोंके सत्संगसे मुझे हमेशा लाभ होगा।

रचनात्मक कामके पीछे रही भावना

अिसके बाद आचार्य विनोबा भावेका भाषण हुआ, जो सम्मेलनका मुख्य भाषण था। अुनके १०० मिनटके भाषणके लिअे, जो विनोबाजीके आज तकके भाषणोंमें शायद सबसे लम्बा था, अुपयुक्त शीर्षक होगा "रचनात्मक कामके पीछे रही भावना"। स्वर्गीय श्री किशोरलालभाअीको अत्यन्त हार्दिक श्रद्धांजलि देते हुअे अुन्होंने रचनात्मक कामकी पूरी तसवीर और पूरा दर्शन लोगोंके सामने रखा — अुसका अुद्देश्य, अुसकी पद्धति और अुसका कार्यक्रम। अुन्होंने कहा, रचनात्मक कामका अुद्देश्य है स्वतंत्र लोकशक्ति पैदा करना, जो हिंसक शक्तिके खिलाफ और कानूनी शक्तिसे भिन्न है। अिसलिअे जब मैं कुछ दिन पहले पंडित जवाहरलाल नेहरूसे मिला, तब मैंने अुनसे कहा था कि जैसे राज्य हरअेकको अक्षरज्ञान देनेकी जिम्मेदारी अपने सिर लेता है, अुसी तरह अुसे देशके हर आदमीको कताअी सिखानेकी जिम्मेदारी अपने पर ले लेनी चाहिये।

विनोबाजीने कहा कि अूपरका ध्येय द्विविध पद्धतिका अनुसरण करनेसे सिद्ध हो सकता है: हृदय-परिवर्तन या विचार-शासन और कामका विकेन्द्रीकरण। अिसके लिअे अुन्होंने चार तरहका कार्यक्रम बताया: (१) रचनात्मक काम करनेवाली संस्थाओंको अेक सुगठित संस्थाका रूप देना, (२) १९५७ तक भूदान-यज्ञमें ५ करोड़ अेकड़ भूमि अिकट्ठी करना, (३) सम्पत्ति-दान-यज्ञ और (४) सूतांजलि। अिसके बाद सम्मेलनकी पहली बैठक खतम हुअी।

श्री जयप्रकाशकी अपील

दूसरी बैठक शामको ३ से ६ तक हुअी। अंतिम आधे घंटेमें प्रार्थना की गअी। देशके विभिन्न भागोंसे आये हुअे कार्यकर्ताओंने अपना-अपना अनुभव सुनाया और अपनी प्रवृत्तियोंमें आनेवाली कठिनाअियां बताअीं।

www.vinoba.in

अुस दिनका अन्तिम भाषण प्रसिद्ध समाजवादी नेता श्री जयप्रकाशनारायणका था। अिस क्रांतिकारी नेताको अहिंसक पद्धतिकी हिमायत करते देख कर आनन्द होता था। अुन्होंने अपने हृदय-परिवर्तनकी बात स्वीकार की। अुन्होंने सब लोगोंसे विनोबाजीके भूदान-यज्ञ-आन्दोलनमें शामिल होनेकी अपील की और विद्यार्थियोंसे खास तौर पर कहा कि वे भूदान-आन्दोलनके लिअे अेक साल तक अपने स्कूल-कॉलेज छोड़ दें और जमीन अिकट्ठी करनेमें लग जायं।

८ मार्चको सबेरे भी कार्यकर्ताओंने अपने कामकी सामान्य चर्चा की। अुस बैठकमें तीन महत्त्वपूर्ण भाषण हुअे। लोकसेवक-संघ (मानभूम) के श्री अरुणचन्द्र घोषने यह समझाते हुअे कि वे या अुनके साथी भूदान-यज्ञ-आन्दोलनमें क्यों शरीक नहीं हुअे, कहा कि आजकी सरकार और कांग्रेस पार्टी जिलेके लोगोंके बुनियादी अधिकारोंको कुचल रही है। काश्मीरके जनाब मोहम्मद शफीने बताया कि काश्मीरमें अुन लोगोंने जमीनकी समस्या कैसे हल की। पिछड़ी हुअी जातियोंके नये कायम किये गये कमीशनके अध्यक्ष श्री काकासाहब कालेलकरने नौजवानोंका आह्वान करते हुअे कहा कि देशके नवयुवक आगे आवें और दबे और कुचले हुअे लोगोंकी स्थिति सुधारनेमें अुनकी मदद करें, क्योंकि अिसके बिना सर्वोदयकी स्थापना नहीं हो सकती। दूसरी महत्त्वपूर्ण चीज बिहारके गया जिलेमें भूदान-यज्ञ-आन्दोलनका काम करनेवाली लड़कियोंके हार्दिक अुद्गार थे। अुनके दिलको छूनेवाले वर्णनोंसे विनोबाके अिस आन्दोलनकी महती अुपयोगिता और अद्भुत संभावनाओंका प्रमाण मिलता था।

स्त्रियों द्वारा आभूषणोंका दान

सम्मेलनमें भाग लेनेवाली स्त्रियोंकी अेक सभा दोपहरमें श्रीमती जानकीदेवी बजाजकी अध्यक्षतामें हुअी, जिसका कार्यक्रम लगभग अेक घंटे तक चला। विनोबाजी भी वहां मौजूद थे। अुन्होंने बहनोंसे अपने गहने त्याग देनेके लिअे कहा। सचमुच अुनमें से कुछ बहनें आगे आअीं और अुन्होंने अपनी अंगूठी, चेन वगैरा दानमें दे दी। और अिस तरह आभूषण-दान आन्दोलनका प्रारंभ किया। क्या हमारी अन्नपूर्णा कही जानेवाली बहनें अिस अुदाहरणका अनुकरण करेंगी?

जमीनके बंटवारेके बारेमें कुमारप्पा

तीसरे पहरकी बैठक महाराष्ट्रके प्रसिद्ध संत-गायक श्री तुकड़ोजी महाराजके दिलके तारोंको हिला देनेवाले भाषणसे शुरू हुअी। अुन्हें अिस बातका पक्का विश्वास था कि लोग विनोबाजीके आन्दोलनमें सक्रिय भाग लेंगे और देशकी शकलको बदल देंगे। अिसके बाद देश-विदेशमें प्रसिद्ध श्री जे० सी० कुमारप्पा आये। अुन्होंने जमीनके योजनाबद्ध बंटवारे पर जोर दिया, जिसका आधार व्यक्ति नहीं बल्कि समाज हो। अुन्होंने सर्वोदय-सेवकोंसे कहा कि कुछ समयके लिअे वे विनोबाजीको भूल जायं, अपनेको जमीनका ट्रस्टी मानें और खुद अिस बड़ी भारी समस्याको हल करें। अुन्होंने अिस बातकी अुत्कट आशा प्रकट की कि अुनमें से हरअेक विनोबाजी बन जायगा और तब तक चैन नहीं लेगा, जब तक यह जमीनकी समस्या सन्तोषप्रद रूपमें हल नहीं हो जाती।

अिसके बाद सर्व-सेवा-संघ (सर्वोदय समाजकी कार्यकारिणी)के महामंत्रीने अेक प्रस्ताव रखा। अिस प्रस्तावमें पिछले सालका — अप्रैल १९५४ तक २५ लाख अेकड़ जमीन अिकट्ठी करनेका — निर्णय ही नहीं दोहराया गया, बल्कि यह भी निश्चय किया गया कि १९५७ के पहले ५ करोड़ अेकड़ जमीन अिकट्ठी करके देशमें शोषण-मुक्त और समानतापूर्ण समाजकी स्थापना की जायगी।

सरकारी योजनाओंके प्रति रुख

तीसरे और आखिरी दिनकी कार्रवाअी हमेशाकी तरह कताअीसे शुरू हुअी। अिसके बाद विनोबाजीका भाषण हुआ, जिसमें अुन्होंने दो मुख्य बातोंके बारेमें अपनी राय पेश की: (१) सरकारी योजनाओं और राजनैतिक पार्टियोंके बारेमें अपना रुख; और (२) भूदान-यज्ञका काम करनेवाले संगठनका स्वरूप। सरकारी योजनाओंके बारेमें अुन्होंने कहा कि मुख्य भेद रास्ते और दृष्टि-कोणका है, जिसमें दूसरे अनेकों भेद समाये हुअे हैं। लेकिन केवल टीका करना हमारी शक्तिका अपव्यय ही है, जिसका अुपयोग भूदान-यज्ञ जैसे रचनात्मक कार्योंमें होना चाहिये। अच्छी या अुपयोगी बातोंमें सरकारके साथ सहयोग किया जा सकता है, लेकिन हमें अुसीमें अुलझ नहीं जाना चाहिये।

विनोबाजीने कहा कि पश्चिमकी लोकशाही दो पार्टियों और बहुमतके वोट पर आधार रखती है। लेकिन हमारे देशमें केवल पंचोंकी सर्वसामान्य आवाज अीश्वरकी आवाज मानी जाती थी। अिसलिअे यहां सारी पार्टियोंको अैसे कार्यक्रमों पर ही अमल करना चाहिये, जिन पर वे सब अेकमत हों; और जिनके बारेमें अुनमें मतभेद हो, अुनकी चर्चा करनी चाहिये।

भूदानके लिअे विनोबाका आह्वान

हैदराबादमें भूदान-यज्ञ-आन्दोलनके जन्मसे लेकर बिहार तकके अुसके विकासका अितिहास बताते हुअे विनोबाजीने कहा, यह काम गहराअीसे और विस्तारसे किया जाना चाहिये। बिहारके कार्यकर्ताओंने ३२ लाख अेकड़का लक्ष्य निर्धारित किया है और वे गयामें अपना सारा ध्यान और शक्ति केन्द्रित करनेवाले हैं। अन्तमें अुन्होंने सारे अुपस्थित लोगोंसे कहा कि वे अपना सम्पूर्ण कामकाज छोड़कर अेक सालके लिअे सच्चे दिलसे भूदान-यज्ञ-आन्दोलनमें लग जायं।

अिस शान्त और दिलको झकझोरनेवाले भाषणके बाद शराब-बन्दीका प्रस्ताव पेश किया गया। अुसमें राज्य-सरकारोंसे अपील की गअी कि अिस सम्बन्धमें वे अपने प्रयत्न ढीले न करें और अिस महान अुदात्त ध्येयकी ओर सच्चे दिलसे बढ़ें।

ग्रामराज्यका आदर्श

तीसरे पहरकी बैठकमें महामंत्रीने सर्वोदय समाजके आदर्शको बतानेवाला अेक दूसरा प्रस्ताव रखा। वह आदर्श है ग्राम-स्वराज्य या ग्रामराज्यका, जिसका अर्थ है सच्ची लोकशाही और व्यक्तिका पूर्ण विकास। प्रस्तावमें कहा गया है कि अिसकी मुख्य शर्त मिलकी चीजोंका बहिष्कार है।

सार्वत्रिक विकेन्द्रीकरणकी जरूरत

अिसके बाद सम्मेलनके अध्यक्ष श्री धीरेन्द्रभाअीने सम्मेलनका अुपसंहार करनेवाला भाषण दिया, जो अुतना ही छोटा था जितना कि अुनका आरम्भका भाषण। अुन्होंने सम्मेलनकी प्रगति पर प्रसन्नता प्रगट की और सब लोगोंसे भूदान-यज्ञ-आन्दोलनमें पूरी शक्तिसे लग जानेकी अपील करते हुअे कहा कि जिन पर संस्थायें चलानेकी जिम्मेदारी हो, वे १९३० की तरह आज भी नौजवानोंको अपनी जिम्मेदारियां सौंपकर अिस काममें जुट सकते हैं। धीरेन्द्रभाअीने अिस बातकी चेतावनी दी कि अगर हमने औद्योगिक अुत्पादन और दूसरे क्षेत्रोंमें विकेन्द्रीकरण दाखिल न करके केवल जमीनका ही विकेन्द्रीकरण किया, तो यह हमें सर्व-सत्तावादकी ओर ले जायगा और अन्तमें हमारा नाश कर देगा।

www.vinoba.in

कार्यकर्ताओंको विनोबाकी सलाह

अिसके बाद विनोबाजीका आशीर्वादात्मक भाषण हुआ। अुन्होंने कार्यकर्ताओंकी कमियां और कमजोरियां बताअीं। पहले, अुन्होंने सहिष्णुता, सहानुभूति और मानवदयाकी हिमायत की। दूसरे, अुन्होंने कार्यकर्ताओंसे अनुरोध किया कि कामके साथ वे अध्ययन भी करें और विचारपूर्वक अपना ज्ञान बढ़ाते रहें। तीसरे, अुन्हें चीजोंको समग्र रूपमें देखना चाहिये; अुनके किसी अेक पहलू तक ही अपनेको सीमित नहीं रखना चाहिये। चौथे, अुन्हें अपनी दैनिक प्रार्थनाको प्राणवान बनाना चाहिये, जो सच्ची श्रद्धासे प्रेरित कार्यके बजाय सद्व्यवहार या शिष्टाचार मात्र रह गअी है। अन्तमें अुन्होंने कहा कि जो लोग अपना पूरा समय भूदान-यज्ञके काममें दे सकते हैं, वे अपने नाम मुझे या प्रान्तीय संयोजकोंको दे दें।

प्रार्थनाके बाद सम्मेलन समाप्त हुआ। चांडिल सर्वोदय सम्मेलन भूदान-यज्ञ-आन्दोलनको अेक निश्चित और स्पष्ट स्वरूप देनेके लिअे याद किया जायगा — अैसा आन्दोलन, जो आर्थिक स्वतंत्रता सिद्ध करना और मनुष्य तथा अुसके श्रमकी प्रतिष्ठाको बढ़ाना चाहता है। वह आम तौर पर लोगों पर और विशेषतः रचनात्मक कार्यकर्ताओं पर यह जिम्मेदारी डालता है कि वे अिस युगान्तरकारी आन्दोलनमें यथाशक्ति भाग लें और अपने प्रति व देशके प्रति सच्चे साबित हों।

अलाहाबाद, १४–३–'५३ **सुरेश रामभाअी**

(अंग्रेजीसे)

टिप्पणियां

वह गलतफहमी थी

कुछ हफ्ते पहले मद्रासके मुख्यमंत्री श्री राजगोपालाचार्यने मदुरा कॉलेजके वार्षिक अधिवेशनके मौके पर आजके भारतमें अंग्रेजीके अभ्यासके महत्त्वके विषयमें जो भाषण दिया था, अुसकी रिपोर्ट अखबारोंमें छपी थी। अखबारोंकी रिपोर्टसे मालूम होता था कि अुन्होंने अंग्रेजीके भारतमें बने रहनेकी जोरदार हिमायत की और अुसे "भगवती सरस्वतीका वरदान" बताया था।

अुनके भाषणकी जो रिपोर्ट हमें मिली, अुससे मालूम होता था कि वे बहुत करके अैसे लोगोंको जवाब दे रहे थे, जो मानते हैं कि अंग्रेज शासकोंके साथ अंग्रेजी भाषाको भी भारत छोड़ देना चाहिये। लेकिन अुसकी जो सीमित रिपोर्ट अिस तरफके अखबारोंमें छपी, अुससे कुछ लोगोंको लगा कि श्री राजगोपालाचार्य अंग्रेजीको फिरसे दाखिल करनेके प्रश्नका समर्थन करते हैं, जो बम्बअी राज्यको परेशान करता रहा है। कुछ लोगोंने सरल भावसे यह मान लिया कि श्री राजगोपालाचार्यने यह सुझाया है कि अंग्रेजी पांचवें दर्जेसे दाखिल की जा सकती है। मुझे लगा और अेक सभामें मैंने कहा भी कि यह ठीक नहीं है; यह मानकर कि अुन्होंने ५वें दर्जेसे अंग्रेजी दाखिल करनेका समर्थन किया है, हम श्री राजगोपालाचार्य जैसे चतुर और धुरंधर राजनीतिज्ञके साथ अन्याय करेंगे। अिस बातका निश्चय करनेके लिअे मैंने अुन्हें लिखा और अुनसे यह बतानेकी विनती की कि मेरा अूपरका अनुमान ठीक है या नहीं। अुन्होंने मुझे तुरन्त जवाब देनेकी मेहरबानी की और लिखा:

> "मदुरामें मैं केवल दूसरी भाषाओंके अध्ययनके साथ-साथ अंग्रेजीके अध्ययनके सामान्य महत्त्वकी बात कर रहा था। जैसा कि आपने सही अनुमान लगाया है, मेरा अिरादा अुन लोगोंको जवाब देनेका था, जो यह मानते हैं कि अंग्रेज लोगोंके साथ अंग्रेजी भाषाको भी भारत छोड़ देना चाहिये। अुसका किसी जगहके अैसे किसी प्रस्तावसे कोअी सम्बन्ध नहीं था कि प्राथमिक शिक्षामें आजके बनिस्बत ज्यादा जल्दी अंग्रेजीकी पढ़ाअी शुरू की जानी चाहिये।"

आशा है, अिससे स्थिति साफ हो जायगी और राजाजीकी रायके बारेमें लोगोंके मनमें रही गलतफहमी दूर हो जायगी।

१–४–'५३ **म० प्र०**

(अंग्रेजीसे)

हमारी भाषा-नीति

"नागपुर, १८ मार्च: मुख्यमंत्री श्री रविशंकर शुक्लने कल रातको यहां अेक प्रतिनिधि-मंडलको यह विश्वास दिलाया कि सरकार हिन्दी और मराठीको समान दर्जे पर रखनेके लिअे जल्दी ही मध्यप्रदेशकी राजभाषाओंसे सम्बन्ध रखनेवाले अेक्टमें सुधार करने जा रही है।

"प्रतिनिधि-मंडलके सदस्योंने मुख्यमंत्रीसे कहा कि १५ अगस्त, १९५३ से अिस अेक्टके अमलसे मराठीके हितको नुकसान पहुंचेगा। क्योंकि अुसमें हिन्दीको ही सारे सरकारी नियमों, आज्ञाओं, अुप-कानूनों तथा धारासभाके बिलों और अेक्टोंमें अुपयोग की जानेवाली राजभाषा बताया गया है, यद्यपि सरकारी भाषाओंकी परिभाषामें अेक्ट हिन्दी और मराठी दोनोंको शामिल करता है। अुन्होंने कहा कि यह परस्पर विरोधी व्यवस्था दो प्रादेशिक भाषाओंके सन्तुलनको बिगाड़ देगी और अलगावकी हलचलको जन्म देगी।

"पंडित शुक्लने अुन्हें यह कहा माना जाता है कि धारासभाके चालू सत्रमें जरूरी संशोधन अेक्टमें दाखिल कर दिया जायगा।"

अूपरकी खबर बड़े महत्त्व की है, क्योंकि वह भारतीय संविधानमें हमारे द्वारा अख्तियार की जानेवाली भाषा-नीतिके बारेमें जो आदेश दिया गया है, अुसकी भावनाको प्रकट करती है। यह टाले जा सकनेवाले अुस विवादसे बिलकुल भिन्न है, जो अुत्तर प्रदेशमें वहांकी दो प्रादेशिक भाषाओं — हिन्दी और अुर्दू — को स्वीकार करनेके बारेमें चल रहा है। हम आशा करें कि अुत्तर प्रदेश अिस सम्बन्धमें मध्यप्रदेशके सुन्दर अुदाहरणका अनुसरण करेगा, जिसके लिअे मध्यप्रदेश हमारी बधाअीका पात्र है।

३१–३–'५३ **म० प्र०**

(अंग्रेजीसे)

गांधीचरितमानस

[बालकांड]

योजक: **बालजी गोविन्दजी देसाअि**

कीमत ०–६–० डाकखर्च ०–२–०

नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद – ९

विषय-सूची

		पृष्ठ
प्रधानमंत्रीकी घोषणा	जवाहरलाल नेहरू	४१
आर्थिक समानता	गांधीजी	४१
आध्यात्मिक मूल्योंकी पुनःस्थापना		४२
श्रमकी पूंजीका अुपयोग करो		४३
चेतावनी और संकेत	मगनभाअी देसाअी	४४
मद्रास सरकारकी कपड़ेकी अेक नअी किस्म	श्रीकृष्णदास जाजू	४४
चांडिल सम्मेलनकी फलश्रुति	विनोबा	४५
चांडिल सर्वोदय सम्मेलन	सुरेश रामभाअी	४६
टिप्पणियां:		
वह गलतफहमी थी	म० प्र०	४८
हमारी भाषा-नीति	म० प्र०	४८

www.vinoba.in